Toppersnotes
Unleash the topper in you

SUPER-TET

Uttar Pradesh Basic Education Board

परीक्षा नियामक प्राधिकारी, उ.प्र.

एडेड जूनियर हाई स्कूल

प्रधानाध्यापक

पेपर - 1 || भाग - 1

शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशासन तथा सामान्य अध्ययन

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

1. विद्यालय प्रबन्धन 1
2. भौतिक संसाधनों का प्रबन्धन 4
3. मानवीय संसाधनों का प्रबन्धन 10
4. वित्तिय प्रबन्धन 14
5. शैक्षणिक प्रबन्धन 16
6. समय-तालिका प्रबन्धन 21
7. आपदा प्रबन्धन 26
8. विद्यालय के प्रबन्धन में विभिन्न अभिकर्मियों की भूमिका 33
9. प्रारम्भिक शिक्षा के विकास हेतु अभिकरण 40
10. प्राथमिक शिक्षा का आधारभूत ढाँचा 49

इतिहास

11. प्राचीन इतिहास 53
12. सिन्धु घाटी सभ्यता 54
13. वैदिक काल (साहित्य) 57
14. बौद्ध धर्म 61
15. जैन धर्म 62
16. महाजनपद काल 63
17. विदेशी आक्रमण 65
18. मौर्य वंश 65
19. मौर्योत्तरकाल 67
20. गुप्तवंश 68
21. गुप्तोतर काल 70
22. मध्यकालीन भारत 73
23. मुगलकाल 78
24. भक्ति एवं सूफी आन्दोलन 83
25. मराठा उद्भव 85
26. आधुनिक भारत का इतिहास 87
27. मराठा शक्ति का उत्कर्ष 89
28. अंग्रेजो की भू-राजस्व पद्धतियाँ 91
29. आंग्ल-मैसूर संघर्ष 92
30. आंग्ल-सिक्ख संघर्ष 93

31. गवर्नर जनरल 94
32. भारत के वायसराय 96
33. 1857 की क्रान्ति 98
34. धर्म एवं समाज सुधार आन्दोलन 99
35. राष्ट्रीय आन्दोलन 101
36. भारतीय संविधान 114
37. संविधान की पृष्ठभूमि 115
38. भारतीय संविधान के स्त्रोत 116
39. संविधान के भाग 117
40. अनुसूचियाँ 129
41. संघ 131
42. मंत्रिमण्डल 135
43. संसद 135
44. राज्य 143
45. आपातकालीन उपबंध 146
46. संविधान संशोधन 148
47. भारतीय राज्यव्यवस्था से सम्बन्धित महत्वपूर्ण 150
48. भारत के प्रमुख बांध की सूची 157
49. भारत के पक्षी अभ्यारण 158
50. भारत की जनसंख्या 159
51. भारत के प्रमुख बन्दरगाह 160
52. भारत के प्रमुख नृत्य 160
53. भारत के प्रमुख स्टेडियम 162
54. प्रमुख व्यक्ति एवं उनके उपनाम 163
55. भारत के प्रमुख स्थल एवं उनके निर्माणकर्ता 163
56. राज्य एवं उनके मुख्यमंत्री 164
57. भारत के राष्ट्रपति 164
58. भारत के प्रधानमंत्री 165
59. लोकसभा अध्यक्ष 166
60. नोबेल पुरस्कार प्राप्त भारतीय 169
61. भारत के सर्वाधिक बडा, लम्बा एवं ऊँचा 172
62. भारत के प्रथम पुरूष 173
63. यूनेस्को द्वारा घोषित भारत स्थित विश्व धरोहर 175

भारतीय भूगोल

1. भारत का विस्तार 194
2. भारत के भौगोलिक भू-भाग 196
3. भारत का अपवाह तंत्र 202
4. जैव-विविधता 207
5. भारत के बायोस्फीयर रिजर्व 211
6. भारत की मिट्टी/मृदा 214
7. जलवायु 215
8. भारत में खनिजों का वितरण 216
9. भारत के प्रमुख उद्योग 219
10. परिवहन 222
11. कृषि 226
12. भारत में निवास करने वाली जनजातियाँ 229
13. भौतिक भूगोल 231
14. पृथ्वी का वायुमण्डल 233
15. विश्व भूगोल के महत्त्वपूर्ण तथ्य 234
16. पर्यावरण 242

आधुनिक भारत का इतिहास

भारत में यूरोपियन शक्तियों का आगमन

सत्रहवीं शताब्दी के दौरान भारत विदेशी व्यापार का एक ऐसा आकर्षण केन्द्र बन गया था कि हर विदेशी राष्ट्र व्यापार के माध्यम से उस पर अपना आधिपत्य जमाना चाहता था । क्योंकि –
भारत में अग्रांकित यूरोपियन शक्तियाँ अपने हित साधने हेतु आयी –

पुर्तगाल – (1498)
डच – (1596)
अंग्रेज – (1600)
डेनिश – (1616)
फ्रांसीसी - (1664)
स्वीडिश – (1731)

1. पुर्तगाली

- प्रथम पुर्तगाली यात्री 'वास्को – डी – गामा' था जिसने भारत की खोज (1498) की ।
- अब्दुल मनीक नामक गुजराती व्यक्ति उसका मार्गदर्शक था ।
- वास्को – डी – गामा पश्चिमी तट के कालीकट बन्दरगाह पर आया था ।
- कालीकट के जमोरिन (वहाँ का राजा) ने वास्को – डी – गामा का स्वागत किया ।
- वास्को – डी – गामा को भारत के साथ व्यापार में 60 गुना फायदा हुआ था ।
- 1502 में वास्को – डी – गामा दूसरी बार भारत आया ।
- 1524 में वास्को – डी – गामा की भारत में ही मृत्यु हो गई ।
- 1961 तक इनका गोआ, दमन व द्वीप पर अधिकार था ।
- पेड्रो अल्वारेज केबाल : दूसरा पुर्तगाली यात्री (1500 ई. में)
- 1503 में पुर्तगालियों ने कोचीन में प्रथम फैक्ट्री की स्थापना की ।
- पुर्तगालियों का प्रथम गर्वनर फ्रांसिस्को – डी – अल्मेडा भारत में 1505 में बनाया ।
- अल्फांसो – डि – अल्बुकर्क : द्वितीय पुर्तगाली गर्वनर 1509 में भारत आया ।
- यह पुर्तगालियों का भारत में वास्तविक संस्थापक था
- (1509 में) अल्बुकर्क ने कृष्णदेवराय (विजयनगर) के कहने पर बीजापुर के राजा युसुफ आदिल शाह से गोवा छीन लिया था
- 1530 में 'नीनो डि कुन्हा' ने कोचीन से अपनी राजधानी को गोवा में विस्थापित कर ली थी तथा 1961 तक गोवा पर पुर्तगालियों का शासन रहा ।

नोट : 1542 में जेसुइट संत जेवियर (पादरी), अल्फांसो डी सूज़ा (गर्वनर) के साथ भारत आया था ।
नीले समुद्र की नीति – पुर्तगालियों का समुद्र पर एकाधिकार था ।

पुर्तगालियों का सामुद्रिक साम्राज्य एस्तादो द इण्डिया कहलाता था ।

- पुर्तगालियों ने भारत में बडे जहाजों का निर्माण प्रारम्भ किया ।
- 1556 में गोवा में पहली बार प्रिंटिंग प्रेस (छापाखाना) लगाया गया ।
- मक्का और तम्बाकू की फसल बाद में पुर्तगालियों ने प्रारम्भ की ।
- स्थापत्य कला की ''गोथिक शैली'' प्रारम्भ की । (ऊँची उठी हुई छते)

2. डच

कार्नेलियन डे हस्तमान : पहला डच यात्री 1596 में भारत आया ।

- 1602 में डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना हुई
- 1605 में 'मसूलीपट्टनम' (पूर्वी तट पर) में पहली फैक्ट्री की स्थापना की ।
- 1653 में चिनसूरा (बंगाल) में फैक्ट्री शुरू की ।
- इस फैक्ट्री को गुस्तावास फोर्ट कहा जाता था ।
- 1759 में अंग्रेजो ने 'वेदरा के युद्ध' में डचों को हरा दिया था ।

3. डेनिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी

- डेनमार्क की ''ईस्ट इण्डिया कम्पनी'' की स्थापना 1616 ई. में हुई ।
- इस कम्पनी ने 1620 में त्रैंकोंवार (तमिलनाडु) तथा 1667 में सेरामपुर (बंगाल) में अपनी व्यापारिक कम्पनियाँ स्थापित किये ।
- श्रीरामपुर डचों का प्रमुख केन्द्र था ।

- 1854 में डचों ने अपनी वाणिज्यिक कम्पनी अंग्रेजों को बेच दी ।

4. अंग्रेज

जॉन मिडेनहॉल (1599) : प्रथम अंग्रेज यात्री

- 31 दिसम्बर 1600 की ईस्ट इण्डिया कम्पनी (अंग्रेजी) की स्थापना की गई ।
- यह एक निजी कम्पनी थी ।
- महारानी ऐलिजाबेथ प्रथम ने कम्पनी को भारत में व्यापार के लिए 15 वर्षो का एकाधिकार दिया । कालान्तर में इसे 20-20 वर्षो के लिए आगे बढाया गया ।
- 1608 में इंग्लैण्ड के राजा जैम्स प्रथम का राजदूत कैप्टन हॉकिन्स मुगल बादशाह जहाँगीर के दरबार में आया । वह फारसी भाषा का जानकार था ।
- जहाँगीर ने इसे 400 का मनसब दिया था । लेकिन वह व्यापारिक रियायतें प्राप्त नहीं कर पाया था ।
- 1615 में सर टॉमस रो भारत आये (द्वितीय राजदूत भारत आये) 10 जनवरी 1616 को अजमेर में जहाँगीर से मुलाकात की तथा व्यापारिक रियायते प्राप्त करने में सफल रहा । (लेकिन वास्तव में ये रियायते गुजरात के गवर्नर खुर्रम (शाहजहाँ) ने दी थी)
- 1608 में सूरत में प्रथम फैक्ट्री की स्थापना की
- अंग्रेजो ने चन्द्रगिरि के राजा से चैन्ने नामक गाँव खरीदा तथा यहाँ पर 1639 में मद्रास की स्थापना की ।यहाँ पर सेन्ट जॉर्ज नामक किला बनाया गया
- मद्रास का संस्थापक : फ्रांसिस डे था ।
- इंग्लैण्ड के राजकुमार चार्ल्स द्वितीय की शादी पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन के साथ हुई तथा बॉम्बे दहेज में दिया गया । (1661 में)
- 1668 में बॉम्बे में फैक्ट्री की स्थापना की ।
- 1698 में यहाँ कलकत्ता (कलिकाता) में फैक्ट्री की स्थापना की गई । यहाँ पर फोर्ट विलियम बनाया गया

  संस्थापक : जॉब चारनाक

4 फ्रांसिसी

- 1664 में फ्रांसीसी ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना की गई ।
- नोटः- यह कम्पनी एक 'सरकारी कम्पनी' थी
- 1668 में सूरत में पहली फैक्ट्री की स्थापना की
- संस्थापक : फ्रेंको कैरी
- 1669 में मसूलीपट्टम में फैक्ट्री की स्थापना की
- 1673 में पुदुचेरी गाँव खरीदा तथा यहाँ पर पाण्डीचेरी की स्थापना की ।
- 1674 में बंगाल में चन्द्रनगर नामक गाँव खरीदा

अंग्रेज फ्रांसीसी संघर्ष

- अंग्रेजो तथा फ्रांसीसीयों के बीच 3 युद्ध हुये थे जिन्हें कर्नाटक युद्ध कहा जाता है ।

1. प्रथम कर्नाटक युद्ध : (1746-1748)

कारण : ऑस्ट्रिया का उत्तराधिकार

- एक्स ला शापेल की सन्धि द्वारा यह युद्ध समाप्त हो गया ।

2. दूसरा कर्नाटक युद्ध : (1749-1754)

रियासत	राजा	राजा
1. कर्नाटक	अनवरुद्दीन (सहायक - अंग्रेज)	चन्दा साहिब (सहायक - फ्रांसिसी)
2. हैदराबाद	नासिर जंग (सहायक - अंग्रेज)	मुजफ्फर जंग (सहायक - फ्रांसिसी)

अम्बूर का युद्ध - 1749

- फ्रांसिसी, चान्दा साहिब, मुजफ्फर जंग से मिलकर अनवरूद्दीन को मार दिया ।
- मुजफ्फरजंग ने डुप्ले को कृष्णा नदी के दक्षिण का भाग दिया तथा बस्सी के नेतृत्व में एक सेना (फ्रांसिसी) हैदराबाद में रखी गई ।
- इस प्रकार भारत में सहायक सन्धि की शुरूआत डुप्ले ने की थी ।
- कालान्तर में इस अंग्रेजी गर्वनर जनरल वेलेजली ने बडे तौर पर लागू किया था ।
- डुप्ले को हराकर गोडेहू को नया फ्रांसिसी गर्वनर बनाया गया ।
- इस युद्ध में अन्त में अंग्रेजो की जीत हुई थी ।

3. तीसरा कर्नाटक युद्ध : (1756-63)

कारणः कनाडा पर अधिकार करने के लिए इंग्लैण्ड और फ्रांसिसीयों के बीच सात वर्षीय युद्ध

वाडीवाश का युद्ध (1760)

अंग्रेज → आयरकूट
वर्सेज
फ्रांसिसी → लाली और बुस्सी

इस युद्ध में फ्रांसिसी निर्णायक रूप से हार गये थें । अंग्रेजो ने पाण्डिचेरी पर भी अधिकार कर लिया था ।

- पैरिस की संधि द्वारा युद्ध समाप्त हो गये ।

स्वीडिश

- 1731 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना की

बंगाल

1. मुर्शीद कुली खाँ

- इसने मुर्शीदाबाद को बंगाल की राजधानी बनाया था

2. अली वर्दी खाँ

- इसने यूरोपियन की तुलना मधुमक्खियों से की थी

3. सिराजुद्दौला

- यह अलीवर्दी खाँ का दोहिता था ।

अलीनगर की संधि (9 फरवरी, 1757) :-

सिराजुद्दौला तथा क्लाइव के मध्य

ब्लैक हॉल घटना : (कालकोठरी की घटना) (20 जून 1756)

- अंग्रेजी इतिहासकारों के अनुसार नवाब ने कम्पनी के 146 कर्मचारियों को एक छोटे से कमरे में बंद कर दिया । अगले दिन उनमें से केवल 23 जीवित बचे थें ये घटना अंग्रेज कर्मचारी हॉलवेल द्वारा बताई गई थी ।

प्लासी का युद्ध (23 जून 1757)

क्लाइव वर्सेज सिराजुद्दौला

- सेनापति मीर जाफर (यह क्लाइव से मिल गया था)
- मीर जाफर ने युद्ध से पहले ही सिराजुद्दौला को वापस भेज दिया ।
- मीर मदान, मोहन लाल तथा फ्रांसिसी नवाब के वफादार थे । उन्होंने युद्ध किया तथा मारे गये ।
- इस युद्ध में अंग्रेजो की जीत हुई तथा सिराजुद्दौला को मारकर बंगाल का नया नवाब बना दिया गया ।
- के.एम. पनिक्कर के अनुसार प्लासी का युद्ध, एक युद्ध नहीं बल्कि एक विश्वासघात था

4. मीर जाफर

- इसे क्लाइव का गींदड कहा जाता था ।

5. मीर कासिम

- 1760 में बंगाल के गवर्नर वेन्सिटार्ट ने मीर जाफर को हराकर मीर कासिम को नवाब बना दिया ।

बक्सर का युद्ध (1764)

मीर कासिम (बंगाल)
+
शुजाउद्दौला (अवध)
+
शाह आलम - द्वितीय (मुगल बादशाह)
} वर्सेज हेक्टर मुनरो (अंग्रेज)

- बीच युद्ध में ही शाह आलम अंग्रेजो से मिल गया था तथा मीर कासिम युद्ध छोड कर भाग गया ।
- इस युद्ध में अंग्रेजो की जीत हुई थी ।
  1765 में क्लाइव दुबारा भारत आया तथा उसने शाह आलम – द्वितीय तथा शुजाउद्दौला के साथ सन्धियाँ की । जिन्हे इलाहाबाद की सन्धियाँ कहा जाता है ।

इलाहाबाद की प्रथम सन्धि : (12 अगस्त 1765)

क्लाइव तथा मुगल बादशाह शाहआलम के बीच

इलाहाबाद की दूसरी संधि (16 अगस्त 1765):-

क्लाइव व शुजाउद्दौला के बीच
अंगेजों ने बंगाल में द्वैध शासन लागू किया

मराठा शक्ति का उत्कर्ष

- छत्रपति शिवाजी – 1627 – 1680
- मध्यकाल के पार्ट में इस टॉपिक को पढाया जा चुका है ।

शिवाजी के उत्तराधिकारी :-

- छत्रपति शिवाजी – 1627 – 1680
- शम्भाजी – 1680 –1689
- राजाराम – 1689 – 1700
- ताराबाई – 1700 – 1707
- साहू – 1707 – 1748
- राजाराम – द्वितीय

1. राजाराम प्रथम :-
2. ताराबाई (1700-1707) :-

मराठा संघ के सदस्य :-

- ग्वालियर के सिंधिय
- इन्दौर के होल्कर
- नागपुर के भोंसले
- बडौदा के गायकवाड
- पूना के पेशवा

3. बालाजी विश्वनाथ - (1713-1720 ई.) :
4. बाजीराव प्रथम (1720 - 40) :-

पालखेडा का युद्ध :-
बाजीराव प्रथम वर्सेज चिनकिलच खाँ (निजाम - उल - मुल्क)
(मुंगी शिवगाँव की सन्धि)

- इस युद्ध में मराठों की जीत हुई तथा मुंगी शिवगाँव की संधि हुई ।
- मुहम्मद खाँ बंगश के खिलाफ औरछा के राजा छत्रसाल बुन्देला की सहायता की ।

5. बालाजी बाजीराव (1740-61) :-
पानीपत का तीसरा युद्ध (1761) :-

- मराठे व अहमद शाह अब्दाली
- अहमद शाह अब्दाली का यह भारत पर 5 वां आक्रमण था ।
- मराठे मुगल बादशाह की तरफ से लड रहे थे
- मराठों का औपचारिक सेनापति : विश्वास राव
  वास्तविक सेनापति : सदाशिव राव भाऊ
  तोपखाने का प्रमुख : इब्राहिम खां गार्दी
- इस युद्ध में मराठे बुरी तरह से पराजित हुये ।
- हार का समाचार सुनकर बालाजी बाजीराव की मृत्यु हो गई ।

संगोला की संधि (1750)

- यह संधि छत्रपति राजाराम द्वितीय तथा पेशवा बालाजी बाजीराव के बीच हुई ।
- इसके द्वारा छत्रपति की सारी शक्तियाँ पेशवा को दे दी गई ।

6. माधवराव प्रथम (1761-1772) :-
7. नारायण राव (1772-1773 ई.) :-

माधवराव के पश्चात् उसका भाई नारायणराव पेशवा बना परन्तु एक वर्ष बाद ही उसके चाचा रघुनाथ राव (राघोबा) ने पेशवा बनने के लिए इसकी हत्या कर दी ।

8. माधवराव - द्वितीय (1774-1795 ई.) :-

- पेशवा नारायण राव की मृत्यु के बाद उसकी विधवा गंगाबाई ने एक पुत्र को जन्म दिया । जिसे 1774 में ही पेशवा बना दिया गया ।
- पेशवा की अल्पायु के कारण मराठा राज्य की देखरेख "बाराभाई" नाम की 12 सदस्यों की एक परिषद् किया करती थी । इस परिषद् में सखाराम बापू, महादजी सिंधियाँ तथा नाना फडनवीस प्रमुख थें ।

प्रथम अंग्रेज - मराठा युद्ध : (1775-1782)

1. सूरत की संधि (1775) (राघोवा पेशवा नहीं बनाये जाने पर बॉम्बे प्रेजीडेन्सी के पास चला गया)
   - राघोबा तथा बॉम्बे प्रेजीडेन्सी के बीच
   - अंग्रेज राघोबा को पेशवा बनाने में सैनिक सहायता देंगे ।
   - तथा राघोबा अंग्रेजों को सालसेट, बसीन व थाना देगा ।
2. पुरन्दर की संधि (1776)
   - पेशवा तथा बंगाल प्रेजीडेन्सी के बीच
   - पेशवा की तरफ से नानाजी फडनवीस ने यह संधि की ।
3. बडगाँव की संधि (1779)
   - बडगाँव के युद्ध में हारने पर अंग्रेजो ने यह अपमानजनक संधि की ।
4. सालबाई की संधि (1782)
   - इस संधि द्वारा युद्ध समाप्त हो गया ।
   - महादजी सिंधिया की मध्यस्ता से यह संधि हुई
   - बंगाल के गर्वनर जनरल वॉरेन हेस्टिंग्स ने इसे 'आपत्तिकाल की सफल संधि वार्ता' कहा
     1. इस संधि के द्वारा माधव नारायण राव को पेशवा मान लिया गया ।
     2. राघोवा को पेंशन दे दी गई ।
     3. अंग्रेजों को सालसेट तथा ऐलीफेंटा दिया गया

9. पेशवा बाजीराव - द्वितीय (1795-1818)

- विनायक राव को पेशवा बनाने से नाराज राघोवा का पुत्र बाजीराव - द्वितीय अंग्रेजों के पास जाकर

1802 में बसीन की संधि कर लेता है इस संधि के तहत उसे पेशवा बना दिया गया । यह एक अयोग्य, स्वार्थी एवं महत्वाकांक्षी था । अपनी सर्वोच्चता सिद्ध करने के लिए यह मराठों को आपस में लडवा रहा था

- दौलतराव सिन्धिया एवं जसवन्तराव होल्कर की आपसी प्रतिद्वन्द्विता में इसने सिन्धिया का साथ दिया इस पर होल्कर की सेना ने इनकी संयुक्त सेना को हरा दिया । बाजीराव – द्वितीय ने भागकर अंग्रेजो से 1802 में बसीन की संधि कर ली ।

प्रमुख प्रावधान –

- बाजीराव – द्वितीय ने अंग्रेजी संरक्षकता स्वीकार कर ली ।
- बाजीराव की राजधानी पुनः पूना में स्थापित की जायेगी
- दोनो एक – दूसरे के शत्रु को अपना शत्रु मानेंगे ।
- अंग्रेजो ने लगभग 60,000 सैनिक पेशवा की रक्षा हेतु देने का वायदा किया । बदले में अंग्रेजो को पेशवा 26 लाख वार्षिक आय वाले क्षेत्र देगा ।
- सूरत नगर कम्पनी को दे दिया गया ।
- पेशवा ने निजाम से चौथ प्राप्ति कर अधिकार कम्पनी को दे दिया ।

द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध (1803–1806) :–

बाजीराव को अधीन कर लेने के बाद अंग्रेजों की नजर होल्कर, भोंसले तथा सिंधिया को अपने अधीन कर लेने की थी । मराठों की आपसी फूट का लाभ उठाकर वेलेजेली ने 1803 में युद्ध की घोषणा कर दी । पराजित सिन्धिया ने 30 दिसम्बर 1803 को सुर्जी अर्जुन तथा भोंसले ने देवगाँव की संधि कर ली ।

तृतीय आंग्ल – मराठा युद्ध (1817–1818) :–

- अंग्रेजो ने 1817 में सिंधिया के साथ ''ग्वालियर की संधि'' की जिसके तहत सिन्धिया पिण्डारियों के दमन में अंग्रेजो का साथ देगा ।
- जून 1817 को पेशवा से संधि की जिसके तहत पेशवा ने मराठा संघ की अध्यक्षता त्याग दी ।
- ''नागपुर की संधि'' भोंसले से की गई ।

कालान्तर में इन सभी ने इन संधियों का उल्लंघन करके अंग्रेजों के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर डाली । लेकिन अंग्रेजो ने इन्हें हरा दिया । इससे इनकी शक्ति समाप्त हो गयी ।

लॉर्ड वेलेजली की सहायक संधि :–

- भारत में सर्वप्रथम फ्रांसीसी गवर्नर जनरल डूप्ले द्वारा सहायक संधि का प्रयोग किया गया ।
- लेकिन व्यवस्थित एवं विस्तृत रूप से इसकी शुरूआत 1798 में ब्रिटिश गवर्नर जनरल लॉर्ड वेलेजली द्वारा की गई ।
- वेलेजली ने सर्वप्रथम हैदराबाद, मैसूर एवं तंजौर से सहायक संधि की ।

देशी राज्यों के प्रति अंग्रेजो की नीति :–

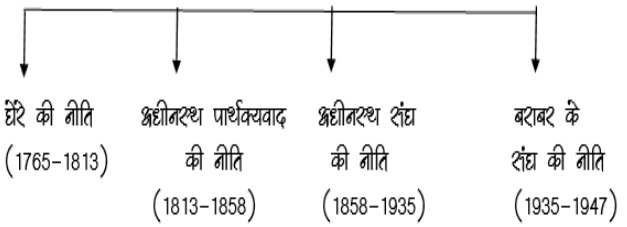

नरेन्द्र मण्डल :–

नरेन्द्र मण्डल की स्थापना 1921 में हुई । यह एक परामर्शदायी संस्था थी । इसके पास किसी भी प्रकार के अधिकार नही थें ।

अंग्रेजों की भू–राजस्व पद्धतियाँ

1. स्थायी बन्दोबस्त या जमींदारी प्रथा :–

- इस व्यवस्था को जागीरदारी, मालगुजारी एवं बीसवेदारी नाम से भी जाना जाता है ।
- इसे जॉन शोर एवं जेम्स ग्राण्ट ने तैयार किया था । 1790 में कार्नवालिस ने दसवर्षीय व्यवस्था को लागू किया ।यह व्यवस्था तत्कालीन ब्रिटिश भारत की 19%भूमि पर लागू की गई ।

2. महालवाडी व्यवस्था (**Mahalwari System**)

- महाल – ग्राम या ग्रामों का समूह ।
- 1819–22 के मध्य यह व्यवस्था निश्चित स्वरूप धारण करती है । इसके आरम्भिक स्वरूप का श्रेय हॉल्ट मैकेन्जी को दिया जाता है ।
- यह ब्रिटिश भारत के 30% भू–भाग पर लागू की गई
- यह व्यवस्था उत्तरप्रदेश, मध्य प्रान्त एवं पंजाब में लागू की गई ।

3. रैय्यतवाडी व्यवस्था

The Rayotwari System

- इस व्यवस्था में प्रत्येक पंजीकृत भूमिदार भूमि का स्वामी होता था जो सरकार को लगान देने के लिए उत्तरदायी होते थें । रैय्यतवाडी व्यवस्था को मद्रास, बम्बई, आसाम आदि क्षेत्रों में लागू किया

गया था । कुल मिलाकर यह ब्रिटिश भारत के 51 प्रतिशत भू-भाग में लागू की गई ।

- 1792 में कैप्टन रीड द्वारा बारामहल में इसे प्रायोगिक तौर पर लागू किया ।
- टॉमस मुनरों ने अपने कार्यकाल के दौरान इसे मद्रास में लागू किया ।

भारत में लोकसेवा का विकास

- लॉर्ड कार्नवालिस ने लोक सेवा के दरवाजे भारतीयों के लिए बंद कर दिये ।
- 1800 लोकसेवकों के प्रशिक्षण हेतु 1800 में कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना ।
- 1805 - हरफोर्ड में ईस्ट इण्डिया कॉलेज की स्थापना की जिसे 1809 में हैलीबरी स्थानान्तरित किया गया ।
- 1833 के चार्टर एक्ट के अनुसार भारतीय लोक सेवा के लिए जा सकते हैं ।
- 1833 का चार्टर एक्ट सीमित रूप में लोक सेवको की भर्ती के लिए प्रतियोगिता परीक्षा का सिद्धान्त मानता है
- 1853 में खुली प्रतियोगिता द्वारा भर्ती का सिद्धान्त स्वीकार किया गया ।
- 1855 में सिविल सर्विस कमीशन की स्थापना की गई
- 1855 में बोर्ड ऑफ कन्ट्रोल द्वारा प्रथम प्रतियोगिता परीक्षा का आयोजन ।
- 1926 में लोक सेवा आयोग का गठन ।

आंग्ल-मैसूर संघर्ष

- मैसूर में वाडियार वंश के चिक्का राजा का शासन था ।
- चिक्का राजा के अयोग्य होने के कारण नंदराज एवं देवराज नामक 2 भाईयों के पास सत्ता थी ।
- 1761 में हैदर अली मैसूर की सत्ता पर अधिकार कर लेता है । हैदरअली ने डिंडीगुल में फ्रांसिसीयों की मदद से तोपखाना लगवाया था ।

प्रथम आंग्ल - मैसूर युद्ध : (1767-69) (मद्रास की संधि) :-

- इस युद्ध में निजाम (हैदराबाद) तथा मराठे अंग्रेज की तरफ थे लेकिन हैदर - अली ने अपनी कूट - नीति से उन्हें अलग कर दिया ।
- हैदर अली मद्रास को घेर लेता है तथा अंग्रेजों को मद्रास की संधि करनी पडी ।
- इस युद्ध में हैदर - अली जीत गया था क्योंकि अंग्रेजों ने ना हैदर अली पर युद्ध हर्जाना लगा पाये तथा दोनों ने एक-दूसरे के जीते हुये क्षेत्र लौटा दिये थें । लेकिन हैदर अली ने अंग्रेजों को करूर वापस नहीं दिया ।

दूसरा आंग्ल - मैसूर युद्ध : (1780-84) (मैंकार्टनी - मंगलौर की संधि) :-

- इस समय अमेरिका में स्वतंत्रता संग्राम चल रहा था तथा फ्रांस इस समय वहा पर इंगलैण्ड के खिलाफ अमेरिका का साथ दे रहा था ।
- अंग्रेजों ने फ्रांसिसीयों की माहे (पांडुचेरी) नामक बस्ती पर आक्रमण कर दिया । हैदर - अली ने इसका विरोध किया क्योंकि वह माहे पर अपना अधिकार समझता था ।
- युद्ध के प्रारम्भ में मराठे व निजाम हैदर अली के साथ थे अंग्रेज सेनापति कर्नल बेली को हरा दिया

पोर्टोनोवा का युद्ध (1781)

तीसरा अंग्रेज - मैसूर युद्ध (1790-1792) :-
(त्रिगुट का निर्माण श्रीरंगपट्टनम की सन्धि)

कारण: त्रावणकोर के राजा ने जैकाटे तथा क्रेगानूर नामक डच बस्तियाँ खरीदने का प्रयास किया तथा टीपू सुल्तान ने इसका विरोध किया ।

- अंग्रेजों ने त्रावणकोर के राजा का साथ दिया
- कॉर्नवालिस ने मराठों व निजाम को मिलाकर त्रिगुट का निर्माण किया (त्रिगुट का निर्माण)
- टीपू सुल्तान ने अंग्रेज सेनापति मीडोस को हरा दिया
- इसके बाद स्वयं कॉर्नवालिस ने आक्रमण (श्री रंगपट्टनम पर) किया तथा टीपू को निर्णायक रूप से हरा दिया गया तथा उसके साथ "श्रीरंगपट्टनम की सन्धि" (राजधानी) की ।
- टीपू सुल्तान पर युद्ध हर्जाना लगाया गया । धन न होने के कारण टीपू सुल्तान के 2 बेटे बंधक बना लियें ।
- टीपू सुल्तान का आधा राज्य ले लिया गया तथा उसे 3 भागों में बाँट लिया ।

अंग्रेज	बारामहल, डिडिगुल, मालाबार
मराठा	तुंगभद्रा के उत्तर का भाग
निजाम	कृष्णा व पेन्नार के बीच का भाग

चौथा आंग्ल - मैसूर युद्ध : (1799) :-

- टीपू सुल्तान पर फ्रांसिसीयों के साथ बातचीत का आरोप लगाया गया । (गर्वनर जनरल वेलेजली के समय)
- टीपू सुल्तान युद्ध में लडता हुआ मारा गया ।

- अंग्रेजो ने वाडियार वंश के चिक्का राजा को मैसूर का राजा बना दिया तथा उसके साथ सहायक संधि कर ली ।
- टीपू सुल्तान ने सक्रिय विदेश नीति का पालन किया तथा तुर्की फ्रांस तथा मिस्त्र के साथ सम्बन्ध स्थापित किये ।
- टीपू ने नाप – तौल की नयी प्रणाली एवं नया कैलेण्डर सिस्टम शुरू किया था ·
- टीपू फ्रांस के जैकोबिन क्लब का सदस्य था ।
- टीपू ने श्रीरंगपट्टनम में स्वतंत्रता का वृक्ष लगया था
- श्रृंगेरी के शारदा मन्दिर का पुनः निर्माण करवाया था

आंग्ल–सिक्ख संघर्ष

पंजाब

- गुरू गोविन्द सिंह की मृत्यु के बाद बंदा बहादुर ने सिखों को संगठित किया था ।
- बन्दा बहादुर की मृत्यु के बाद सिख 12 मिसलों में विभाजित हो गये थे ।
- रणजीतसिंह सुकरचकिया मिसल का था ।
- अफगानिस्तान के राजा जमान शाह ने 1799 में रणजीतसिंह को लाहौर का राजा बना दिया था । (चिनाव में जमान शाह की फंसी हुई तोपे वापस देने के कारण जमाह शाह ने खुश होकर राजा बनाया था)
- 1805 में रणजीत सिंह ने अमृतसर पर अधिकार कर लिया ।

अमृतसर की सन्धि : (1809) :–

- रणजीत सिंह तथा अंग्रेजो के बी
- उस समय गवर्नर जनरल लॉर्ड मिन्टों प्रथम
- इस संधि में अंग्रेजों का प्रतिनिधि चार्ल्स मेटकॉफ था
- 1809 में अफगानिस्तान का शहजादा शाह शुजा, रणजीतसिंह से सहायता माँगता है तथा उसे कोहिनूर हीरा भेंट करता है । लेकिन रणजीत सिंह ने सहायता नहीं की ।
- अंग्रेजो ने शाह शुजा को पेंशन देकर लुधियाना में रख दिया ।
- 1838 में त्रिगुट का निर्माण किया गया तथा इसमें शाह शूजा, कम्पनी, रणजीत सिंह थें । (प्रथम आंग्ल – अफगान युद्ध से पहले)
- 1839 में रणजीत सिंह की मृत्यु हो गई ।
- रणजीत सिंह खालसा के नाम से शासन करता था
- रणजीत सिंह ने गुरू नानक तथा गुरू गोविन्द सिंह नाम के सिक्के चलाये थें ।
- रणजीत सिंह धर्म सहिष्णु शासक था ।
- वह सूफी संतो का आदर करता था ।इसके वित मंत्री दीनानाथ तथा विदेश मंत्री अजीजुद्दीन था ।
- रणजीत सिंह ने अपने प्रशासन में अनेक यूरोपीयन को शामिल किया था ।
  1. वन्तूरा – पैदल सेना प्रमुख
  2. अलोर्ड – घुडसवार सेना प्रमुख
  3. कोर्ट/गार्डनर – तोपखाना प्रमुख (इलाहीबख्श भी तोपखाने का प्रमुख था)
  4. एविटेबल – पेशावर का प्रशासक

– इसकी सेना एशिया की द्वितीय सबसे शक्तिशाली सेना थी ।
  1. रणजीत सिंह के उत्तराधिकारी
  2. खडग सिंह
  3. नौनिहाल सिंह
  4. शेर सिंह
  5. दलीप सिंह

1. प्रथम आंग्ल – सिख युद्ध (1845–46) :–

इस युद्ध में प्रमुख लडाईयाँ
मुदकी
फिरोजशाह
अलीवाल
बद्धोवाल

सबराओं का युद्ध :–

इसमें सिखों की निर्णायक हार हुई । अंग्रेजो ने युद्ध जीत लिया
लाहौर की संन्धिः (9 मार्च 1846)
भैरोवाल की सन्धि (22 दिसम्बर 1846)

2. द्वितीय आंग्ल – सिख युद्धः (1848–1849) :–

कारण : मुल्तान के गवर्नर - मूलराज, हजारा के गवर्नर - चतर सिंह ने विद्रोह कर दिया था ।

- डलहौजी ने गफ के नेतृत्व में पंजाब पर आक्रमण कर दिया ।

गवर्नर जनरल

1773 के रेग्यूलेटिंग एक्ट के तहत बंगाल के गर्वनर को गर्वनर जनरल बना दिया गया ।

गर्वनर जनरल का क्रम :-

1. वॉरेन हेस्टिंग्स (1772-85)
2. लॉर्ड कॉर्नवालिस (1785-93)
3. जॉन शोर (1793-98)
4. वेलेजली (1798-1805)
5. कॉर्नवॉलिस (1772-85)
6. जॉर्ज बारलो (1805)
7. लॉर्ड मिन्टो 1 (1805-07)
8. लॉर्ड हेस्टिंग्स (1807-13)
9. जॉन एडमस (1823)
10. लॉर्ड एमहर्स्ट (1823-28)

1. वारेन हेस्टिंग्स (1772-1785) :-

- 1772 में इसे बंगाल का गवर्नर बनाया गया । 1773 में रेग्यूलेटिंग एक्ट द्वारा इसे बंगाल का गवर्नर जनरल बनाया गया ।
- 1772 में ''कोर्ट ऑफ डाइरेक्टर्स'' के अनुसार इसने बंगाल से द्वैध शासन समाप्त किया ।
- 1784 में पिट्स इण्डिया एक्ट के विरोध में इसने इस्तीफा दे दिया ।
- 1774 में कलकत्ता में सुप्रीम कोर्ट की स्थापना की गई । (1773 के रेग्युलेटिंग एक्ट के अनुसार)
- इसमें अंग्रेजी कानून ही लागू होते थे तथा इसका क्षेत्राधिकार केवल कलकत्ता क्षेत्र ही था ।
- यदि दोनो पक्ष सहमत हो तो बाहर का मामला भी कलकत्ता सुप्रीम कोर्ट में सुना जा सकता है प्रमुख न्यायाधीश (कलकत्ता सुप्रीम कोर्ट)
- एलिजा इम्पे (मुख्य न्यायाधीश)

2. लॉर्ड कार्नवालिस (1786-1793) :-

- अपने न्यायिक सुधारों के तहत इसने सर्वप्रथम जिले की समस्त शक्ति कलेक्टर के हाथों में केन्द्रित कर दी ।
- कार्नवालिस ने भारत में सर्वप्रथम ''कानून की विशिष्टता'' का नियम लागू किया ।
- 1793 में कार्नवालिस ने ''कार्नवालिस कोड'' का निर्माण कराया जो 'शक्तियों के पृथक्करण' के सिद्धान्त पर आधारित था ।
- कार्नवालिस को ''पुलिस सुधारो का जनक'' भी कहा जाता है ।
- इसने बंगाल में स्थायी बंदोबस्त लागू किया ।
- कार्नवालिस को भारत में ''नागरिक सेवा का जनक'' माना जाता है ।

3. लॉर्ड वेलेजली (1798-1805) :-

- यह अपनी सहायक संधि के कारण प्रसिद्ध हुआ ।
- इसके समय ''चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध'' (1799) में हुआ ।
- नागरिक सेवाओं के प्रशिक्षण हेतु इसने 1800 में कलकत्ता में ''फोर्ट विलियम कॉलेज'' की स्थापना की ।
- इसे ''बंगाल का शेर'' उपनाम से भी जाना जाता है
- 1801 में इसके समय मद्रास प्रेसीडेन्सी का सृजन किया गया ।

4. जॉर्ज बॉरलो (1805-07) :-

- 1806 वैल्लोर विद्रोह (मद्रास)
  कारण : अंग्रेजो द्वारा धार्मिक प्रतीकों का प्रयोग बन्द कर दिया था । उस समय मद्रास का गर्वनर विलियम बैन्टिक था । इसने प्रेस पर प्रतिबन्ध को विद्रोह का कारण बताया था ।

5. लार्ड मिन्टो (1807-13) :-

- 1809 अमृतसर की संधि

6. लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813-23) :-

- बिना बराबरी के स्तर पर मुगल बादशाह से मिलने से मना कर दिया ।

प्रथम आंग्ल - नेपाल युद्ध : (1814-16) :-

- संगौली की सन्धि द्वारा युद्ध समाप्त हुआ ।

7. जॉन एडम्स (1823) :-

- इसने प्रेस पर प्रतिबन्ध लगा दिया था ।
- राजाराम मोहनराय के 'मिरातुल अखबार' को बन्द कर दिया था

8. लॉर्ड एमहर्स्ट (1823-28) :-

- यह पहला गवर्नर जनरल जो मुगल बादशाह से बराबरी के स्तर पर मिला ।

प्रथम आंग्ल - बर्मा युद्ध : (1824-26)

- 'यान्दबू की सन्धि' द्वारा यह युद्ध समाप्त हुआ

भारत के गवर्नर जनरल

- 1833 के चार्टर एक्ट द्वारा बंगाल के गवर्नर जनरल को भारत का गर्वनर जनरल बना दिया गया ।
- 'विलियम बैंटिक' भारत का प्रथम गवर्नर जनरल था

गवर्नर का क्रम : (भारत के गवर्नर जनरल)

1. विलियम बैंटिक (1828–35)
2. चार्ल्स मेटकॉफ (1835–36)
3. लॉर्ड ऑकलैण्ड (1836–42)
4. लॉर्ड एलनबरो (1842–44)
5. लॉर्ड हार्डिंग प्रथम (1844–48)
6. लॉर्ड डलहौजी (1848–56)

1. विलियम बैन्टिक (1828–35) :–

- भारत में बंगाल के गवर्नर जनरल के रूप में आया था लेकिन 1833 के चार्टर एक्ट के द्वारा इसे भारत का गवर्नर जनरल बना दिया ।
- 1829 में धारा 17 के तहत सती प्रथा पर रोक लगा दी यह रोक राजाराममोहनराय के प्रयासों से लगी थी
- विलियम बैन्टिक ने ठग प्रथा का उन्मूलन किया था ''कर्नल स्लीमैन'' के नेतृत्व में इसका उन्मूलन किया था ।
- 1835 में कलकत्ता में मेडिकल कॉलेज की स्थापना की ।
- 1835 में मैकाले स्मरण पत्र जारी किया गया जिसमें शिक्षा हेतु विप्रवेशन/निस्यदन/टपक/छनन/बूंद–बूंद सिद्धांत दिया । इसके अंतर्गत भारतीय उच्च वर्ग को अंग्रेजी में शिक्षा दी जाएगी । जो टपक–टपक कर जनसाधारण तक पहुंच जाएगी ।

2. चार्ल्स मैटकॉफ : (1835–36) :–

- चार्ल्स मैटकॉफ को समाचार पत्रों का मुक्तिदाता कहा जाता है ।
- इसने 1818 में राजस्थानों की रियासतों के साथ सन्धि करने के लिए अंग्रेजो की तरफ से प्रतिनिधि था ।

3. लॉर्ड ऑकलैण्ड : (1836–42) :–

प्रथम आंग्ल – अफगान युद्ध : (1839–42)

कारण : अफगानिस्तान का राजा दोस्त मोहम्मद रूस से दोस्ती कर रहा था ।

- कलकत्ता से दिल्ली के बीच जी.टी. रोड का पुनर्निमाण करवाता है ।

4. लॉर्ड एलनबरो: (1842–44) :–

- 1843 में सिन्ध का विलय किया गया ।
  यह विलय नेपियर के नेतृत्व में हुआ था ।
- 1843 में दास प्रथा (धारा–5) पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था ।
  (यह घोषणा 1833 के चार्टर एक्ट के तहत की गई थी ।)

5. लॉर्ड हॉर्डिंग प्रथम (1844–48) :–

- प्रथम आंग्ल सिख युद्ध (1845–46)

6. लॉर्ड डलहौजी (1848–56)

- डलहौजी आधुनिक भारत के मानचित्र का निर्माता था ।
- डलहौजी ने भारतीय रियासतों का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय किया था ।

युद्ध द्वारा किये गये विलय :

1. पंजाब (1849)
2. सिक्किम (1850)
3. लॉअर बर्मा व पीगू (1852)

शान्तिपूर्ण तरीके से किये गये विलय :

गोद निषेध नीति / व्ययगत / हडप नीति

1848 – सतारा

1849 – जैतपुर / संभलपुर

1850 – बघाट

1852 – उदेपुर (एम.पी)

1853 – झाँसी

1854 – नागपुर

1855 – करौली

डलहौजी के सुधार :–

1. 1852 में भारत में तार सेवा शुरू की थी ।
   तार विभाग का प्रमुख ओ शेघने सी
2. 1853 में भारत में रेल सेवा शुरू की ।
   पहली रेल बॉम्बे से थाने के बीच चलाई गई थी ।
   इंजन – फेयरी क्विन

3. 1854 में डाक सेवा शुरू की थी ।
   (डाक टिकट 2 पैसे का होता था)
   डलहौजी ने सैनिको के लिए भी डाकटिकट अनिवार्य कर दिया था ।
4. 1854 में सार्वजनिक निर्माण विभाग (PWD) बनाया गया ।

5. 1854 में शिक्षा में सुधार किये थें ।
ये सुधार चार्ल्स वुड के नेतृत्व में किये थे इसलिए इन्हें वुड डिस्पैच कहा जाता हैं ।
चार्ल्स वुड बॉर्ड ऑफ कन्ट्रोल का अध्यक्ष था ।

भारत के वायसराय

1858 के भारत परिषद् अधिनियम के अनुसार गवर्नर जनरल को वायसराय भी बना दिया गया ।
लॉर्ड कैनिंग भारत का प्रथम वायसराय था ।

(1) लॉर्ड कैनिंग (1856–62)
(2) लॉर्ड एल्गिन प्रथम (1862–63)
(3) जॉन लॉरेन्स (1863–69)
(4) लॉर्ड मेयो (1869–72)
(5) लॉर्ड नॉर्थब्रुक (1872–76)
(6) लॉर्ड लिटन (1876–80)
(7) लॉर्ड रिपन (1880–84)
(8) लॉर्ड डफरिन (1884–88)
(9) लॉर्ड लेन्सडाउन (1888–94)
(10) लॉर्ड एल्गिन – द्वितीय (1894–99)
(11) लॉर्ड कर्जन (1899–1905)

1. लॉर्ड कैनिंग (1856–62) :–

- 1856 में विधवा पुर्नविवाह अधिनियम पारित हुआ (धारा 15) ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के प्रयासो से यह कानून बनाया गया था
- 1857 की क्रान्ति के समय गवर्नर जनरल था ।
- 1857 में कलकत्ता, बॉम्बे व मद्रास में विश्वविद्यालय बनाये गयें । (लंदन विश्वविद्यालय की तर्ज पर)
- 1861 में इण्डियन हाइकोर्ट एक्ट पारित हुआ तथा कालान्तर में बॉम्बे, मद्रास में हाइकोर्ट की स्थापना की गई ।
  - C.P.C., Cr. P.C., I.P.C. को अलग किया
  Civil Procedure Court — Criminal Procedure Court — Indian Penal Court
- 1860 में जेम्स विल्सन के नेतृत्व में आर्थिक सुधार कियें ।
- पहली बार बजट पेश किया गया ।
- (500 रूपये से अधिक आय पर 1% कर लगाया जाता था ।)

2. जॉन लॉरेन्स (1863–69) :–

- केम्पबेल की अध्यक्षता में अकाल आयोग बनाया गया था ।
- भारत से ब्रिटेन के बीच समुद्री टेलीग्राम (तार) सेवा शुरू की ।
- अफगानिस्तान के प्रति इसने कुशल अकर्मण्यता की नीति अपनाई । (कुशल अकर्मण्यता शब्द का प्रयोग J. W. S. वाईली ने किया था ।

3. लॉर्ड मेयो (1869–1872) :–

- मेयो ने भारत में वित्तीय विकेन्द्रीकरण की नीति की शुरूआत की । इसने बजट घाटे को कम किया
- कठियावाड़ एवं अलवर को इसने भ्रष्टाचार एवं कुशासन के आधार पर दण्डित किया ।
- इसने अजमेर में मेयो कॉलेज की स्थापना की ।
- 1872 में इसने एक कृषि विभाग की स्थापना की
- मेयो के शासनकाल में 1872 ई. में सर्वप्रथम प्रायोगिक जनगणना करवाई गईं ।

4. लार्ड नार्थब्रुक (1872–76) :–

- लॉर्ड मेयो की याद में अजमेर में 1875 में मेयो कॉलेज की स्थापना की थी ।
- कूका आन्दोलन का दमन किया था ।

5. लॉर्ड लिटन (1876–80)

- ओवेन मेरेडिथ नाम से साहित्य लिखता था ।
- 1877 में दिल्ली दरबार का आयोजन किया गया तथा महारानी विक्टोरिया को केसर–ए–हिन्द की उपाधि दी थी ।
- रिचर्ड स्ट्रेची के नेतृत्व में अकाल आयोग की स्थापना की गईं ।
- वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट (1878)
- (वर्नक्यूलर – स्थानीय भाषा)
- देशी/स्थानीय भाषा के समाचार पत्र सरकार के खिलाफ लिखने पर जब्त कर लिये जायेंगे ।
- इसे गैगिंग एक्ट (Gagging Act) (मुँह बन्द रखने) भी कहा जाता हैं ।

वैधानिक जनपद सेवा (1879) :–

- लिटन ICS में भारतीयों का प्रवेश रोकना चाहता था इसलिए उसने नई सेवा शुरू की । इनका पद तथा वेतन ICS से कम होता था ।
- इनकी संख्या ICS की $^1/_6$ होती थी ।
- ICS की अधिकतम आयु 19 वर्ष कर दी गईं ।
- सत्येन्द्र नाथ टैगोर प्रथम भारतीय ICS थें ।
- 1886 में लोक सेवा आयोग की स्थापना की गईं
- 1919 के भारत परिषद अधिनियम में केन्द्रीय लोक सेवा आयोग की स्थापना की गईं ।

- 1935 के भारत शासन अधिनियम में संघीय लोक सेवा आयोग की स्थापना की गई । जो बाद में UPSC बन गया ।

6. लॉर्ड रिपन (1880–84) अच्छा रिपन :-

- यह अच्छी प्रवृति का व्यक्ति था ।
- 1881 में प्रथम नियमित जनगणना करवाई ।
- प्रथम कारखाना अधिनियम 1881 लागू हुआ ।
- 1881 में रिपन ने मैसूर वापस लौटा दिया था ।
- 1882 में वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट बंद कर दिया था
- 1882 में भारत में स्थानीय स्वशासन की शुरूआत की गई ।
  (नगरपालिका, नगरबोर्ड आदि बनाये गये)
- 1882 में भारत में शिक्षा सुधार किये गयें । इसके लिए 'हन्टर आयोग' बनाया गया था । प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा में सुधार किये जायेंगें ।

इल्बर्ट बिल विवाद : (1883)

- कोई भी भारतीय न्यायाधीश फौजदारी मामले में अंग्रेज मुजरिम को नहीं सुन सकता था । इसमें P.C. इल्बर्ट विधि सदस्य (Legal Member) था ।
- मिस्त्र में भारतीय सेना भेजने के सवाल पर रिपन ने इस्तीफा दे दिया था ।
- फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने रिपन को भारतीयों का उद्धारक कहा था ।

5. लॉर्ड डफरिन (1884–88)

- 28 दिसम्बर 1885 को कांग्रेस की स्थापना हुई थी । (भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस)

6. लॉर्ड लेन्सडाउन (1888–94)

- भारत – अफगानिस्तान के बीच डुरण्ड लाइन खिंची गई थी ।
- 1891 –दूसरा कारखाना अधिनियम लागू हुआ ।

7. लॉर्ड कर्जन (1899–1905)

- तिलक ने कहा था "कैसा दुर्भाग्य है अकाल, प्लेग, और कर्जन तीनों भारत एक साथ आयें ।"
- एंटनी मैक्डॉनल्ड – अकाल आयोग
- सिंचाई आयोग – स्कॉट मानक्रिफ
- पुलिस आयोग – एंड्रयू फ्रेजर
- विश्वविद्यालय अधिनियम (1904) लागू हुआ ।
- रॉबर्टसन के नेतृत्व में भारत में रेलवे सुधार किये थें
- सबसे अधिक रेलवे का विकास कर्जन के समय में हुआ था ।
- कलकत्ता नगर निगम अधिनियम (1899)
- कर्जन ने नगर निगम में सरकारी सदस्यों की संख्या बढा दी
- भारतीय टंकण एवं पत्र मुद्रा अधिनियम (1899)
- पौण्ड को भारत में वैध किया गया तथा 1 पाउण्ड – 15 रूपये होगा
- रूपये को स्वर्ण प्रमाप पर रखा गया था ।
- सहकारी समिति अधिनियम (1904
- किसानों को सस्ती दरों पर ऋण उपलब्ध करवाने के लिए
- प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम (1904)
- 1904 में पुरातत्व विभाग की स्थापना की गई ।
- 1903 में यंग हसबेंड के नेतृत्व में तिब्बत पर आक्रमण कर दिया । चुंबी घाटी पर 75 वर्षो के लिए अधिकार कर लिया ।
- 1905 में बंगाल विभाजन किया ।

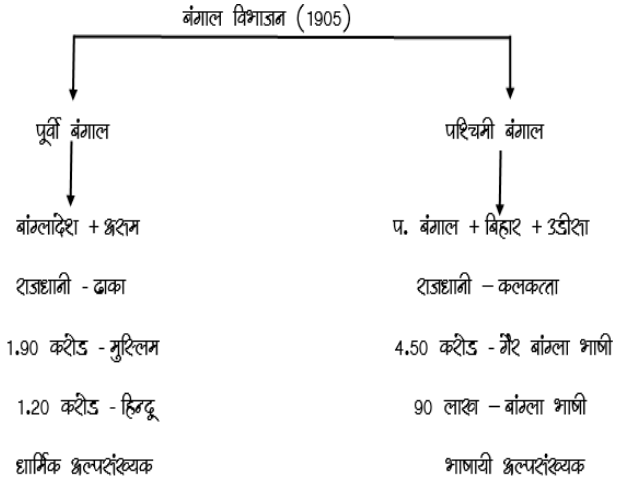

कर्जन ने विभाजन का कारण प्रशासनिक अव्यवस्था बताया लेकिन उसका वास्तविक उद्देश्य बंगाली हिन्दुओं में बढती राष्ट्रवादी भावनाओं को कुचलना था ।

कर्जन के सैनिक सुधार :-

1. सेनापति किचनर ने सैनिको के लिए किचनर टेस्ट शुरू किया गया ।
2. क्वेटा (पाक) में सैनिक अधिकारियों के मिलिट्री प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई ।

सैनिक सदस्य की नियुक्ति पर कर्जन तथा किचनर में विवाद हो गया तथा कर्जन ने इस्तीफा दे दिया ।

1857 की क्रान्ति

- बैरकपुर में 34 वीं इनफेन्ट्री के सैनिक मंगल पाण्डे ने 29 मार्च को चर्बी वाले कारतुसों के खिलाफ विद्रोह कर दिया ।
- 8 अप्रैल को उसे फांसी दे दी गई ।
- 24 अप्रैल को मेरठ छावनी के 90 सैनिकों ने विद्रोह कर दिया ।
- 10 मई को मेरठ छावनी में क्रान्ति की शुरूआत होती है ।
- 20 NI (Native Infantary) तथा 3 L.C. (Light cavelary) ने विद्रोह किया था ।
- विद्रोही सैनिक दिल्ली चले गये तथा 11 मई को बहादुर शाह जफर को अपना नेता बनाया ।
- 25 अगस्त को बहादुरशाह के नाम से आजमगढ (सभी को क्रान्ति के लिए प्रेरित करने के लिए) घोषणा की गई ।

1857 का विद्रोह

भारतीय नायक (विद्रोह के)	समय (विद्रोह का)	केन्द्र	ब्रिटिश नायक (विद्रोह दबाने के)	समय (विद्रोह दबाने का)
बहादुरशाह जफर एवं जफर बख्त खां, कार्यकारी सेनापति (सैन्य नेतृत्व)	11, 12 मई, 1857	दिल्ली	निकलसन हडसन	21 सितम्बर 1857
नाना साहब एवं तात्या टोपे	5 जून, 1857	कानपुर	कैंपबेल	6 सितम्बर 1857
बेगम हजरत महल	4 जून, 1857	लखनऊ	कैंपबेल	मार्च, 1858
रानी लक्ष्मी बाई एवं तात्या टोपे	जून, 1857	झांसी, ग्वालियर	ह्यूरोज	3 अप्रैल, 1858
लियाकत अली	1857	इलाहाबाद, बनारस	कर्नल नील	1858
कुँअर सिंह	अगस्त, 1857	जगदीशपुर (बिहार)	विलियम टेलर, मेजर विसेंट आयर	1858
खान बहादुर खां	1857	बरेली	सर कौलिन कैंपबेल	1858
मौलवी अहमद उल्ला	1857	फैजाबाद		1858
अजीमुल्ला	1857	फतेहपुर	जनरल हैनर्ड	1858

बंगाल आर्मी में सर्वाधिक सैनिक अवध के होते थे इसलिए अवध को 'बंगाल आर्मी की नर्सरी' कहा जाता था ।

- रानी लक्ष्मीबाई ने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया था ।
- सिंधिया ने अंग्रेजो का साथ दिया था तथा रानी लक्ष्मीबाई ग्वालियर में लडते हुये मारी गई ।
- ह्यूरोज ने रानी लक्ष्मीबाई के बारे में कहा कि – "भारतीय क्रान्तिकारियों में एक मात्र मर्द है"
- कैनिन ने कहा था– "सिंधिया अगर क्रान्ति में शामिल हो जाता तो हमें भारत से जाना पडता ।"

क्रान्ति के योजनाकार :–

1. अजीमुल्ला
2. रंगोडी बापू

क्रान्ति का दिन 31 मई तय किया गया था लेकिन मेरठ में क्रान्ति 10 मई को ही शुरू हो गई थी

क्रांन्ति के प्रतीक :–

1. कमल का फूल
2. रोटी

क्रांन्ति का स्वरूप :–

अंग्रेज इतिहासकार	मत
1. लॉरेन्स/सीले	सैनिक विद्रोह
2. T.R. होम्स	सभ्यता व बर्बरता के बीच संघर्ष
3. L.E.R. रीज	धर्मान्धों एवं ईसाईयों के बीच संघर्ष
4. बेंजामिन डिजरैली	राष्ट्रीय विद्रोह
5. आउट्रम / टेलर	अंग्रेजो के विरूद्ध हिन्दू - मुस्लिम षड्यन्त्र

भारतीय

1. वीर सावरकर Book (The First War of the Indian Independence) प्रथम स्वतंत्रता संग्राम तथा अशोक मेहता Book (The Great Rebelion)

2. रमेश चन्द्र मंजूमदार ना पहला, ना राष्ट्रीय, ना स्वतंत्रता संग्राम
   Book – The sepoy multiny & revolt of 1857.
3. सुरेन्द्र नाथ सेन Book – 1857
   सैनिक विद्रोह से कुछ अधिक तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम से थोडा कम

1857 क्रांति का तत्कालीन कारण ब्राउन बेस बंदूकों के स्थान पर नई एनफिल्ड राईफलों का प्रयोग जिनमें चर्बी लगे कारतूस होते थे । इसके डलहौजी हडप नीति भी इसका कारण थी ।

अन्य प्रमुख आन्दोलन

आन्दोलन/ विद्रोह	प्रभावित क्षेत्र	सम्बन्धित नेता/नेतृत्व	विद्रोह का वर्ष
संन्यासी विद्रोह	बिहार, बंगाल	केना सरकार, दिरजीनारायण	1763–1800 ई.
फकी विद्रोह	बंगाल	मजनुशाह एवं चिराग अली	1776–77 ई.
चुआर विद्रोह	बाकुडा (बंगाल)	दुर्जन सिंह	1798 ई.
पॉलीगरो का विद्रोह	तमिलनाडु	वीर पी. काट्टावाम्मान	1799–01 ई.
वेलुथाम्पी विद्रोह	ट्रावनकोर	वेलुथाम्पी	1808–09 ई.
भील विद्रोह	पश्चिमी घाट	सेवाराम	1825–31 ई.
रामोसी विद्रोह	पश्चिमी घाट	चितर सिंह	1822–29 ई.
पागलपन्थी विद्रोह	असोम	टीपू	1825–27 ई.
अहोम विद्रोह	असोम	गोमधर कुँवर	1828 ई.
वहाबी आन्दोलन	बिहार, उत्तर प्रदेश	सैयद अहमद टीटूमीर	1831 ई.
कोल आन्दोलन	छोटा नागपुर (झारखण्ड)	नारायण राव	1831–32 ई.
खासी विद्रोह	असोम	तीरथ सिंह	1833 ई.
फैराजी आन्दोलन	बंगाल	शरीयतुल्ला	1839 ई.
संथाल विद्रोह	बंगाल, बिहार	सिद्धु कान्हू	1855–57 ई.
मुण्डा विद्रोह	बिहार	बिरसा मुण्डा	1899–1900 ई.
पाइक विद्रोह	उडीसा	बख्शी जंगबन्धु	1817 – 1825 ई.
नील आन्दोलन	बंगाल	दिगम्बर	1859–60 ई.
पाबना विद्रोह	पाबना (बंगाल)	ईशानचन्द्र राय एवं शम्भुपाल	1873–76 ई.
दक्कन विद्रोह	महाराष्ट्र	–	1874–75 ई.
मोपला विद्रोह	मलाबार (केरल)	अली मुदालियार	1920–22 ई.
कूका आन्दोलन	पंजाब	भगत जवाहरमल	–
रम्पा विद्रोह	आन्ध्र प्रदेश	सीताराम राजू	1879–1922 ई.
तानाभगत आन्दोलन	बिहार	जतरा भगत	1914 ई.
तेभागा आन्दोलन	बंगाल	कम्पाराम सिंह एवं भवन सिंह	1946 ई.
तेलंगाना आन्दोलन	आन्ध्र प्रदेश	–	1946 ई.

धर्म एवं समाज सुधार आन्दोलन

19 वी सदी के प्रारम्भ में भारत में पुनर्जागरण की स्थिति आई । राजा राम मोहनराय को भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत एवं आधुनिक भारत का पिता कहा जाता है ।

राजाराम मोहनराय :-

उपाधियाँ :-

- आधुनिक भारत का पिता
- भारतीय पुर्नजागरण का जनक
- अतीत व भविष्य के बीच सेतु

इनके द्वारा स्थापित संगठन :-

- आत्मीय सभा 1815
- हिन्दु कॉलेज 1817
- वेदान्त कॉलेज 1825
- ब्रिटिश यूनिटेरियन एसोसिएशन
- ब्रह्म समाज 1828
  (डज घडी साज डेविड हेयर हिन्दु कॉलेज की स्थापना में सहयोगी था)

इनकी पुस्तके :-

1. तुहफ्तुल - मुहावुद्दीन or एकेश्वरवादियों के उपहार or Gift to monothiest
2. हिन्दु उत्तराधिकार के नियम
3. Precepts of Jesus

समाचार पत्र :-

1. मिरातुल अखबार
2. संवाद कौमुदी
3. ब्रह्मोनिकल मैगजीन

अन्य सहयोगी :-

द्वारिका नाथ टैगोर
ताराचन्द चक्रवती

- 1843 में देवेन्द्र नाथ टैगोर ने ब्रह्म समाज को संभाला
- इन्होंने 1839 में तत्वबोधिनी सभा की स्थापना की थी
- पत्रिका - तत्वबोधिनी
- संपादक - अक्षय कुमार दत्त
- देवेन्द्र नाथ टैगोर ने केशवचन्द्र सेन को ब्रह्म समाज का आचार्य नियुक्त किया
- 1865 में केशवचन्द्र सेन को ब्रह्म समाज से निकाल दिया गया तथा इन्होंने बाद में भारतीय ब्रह्मसमाज की स्थापना की ।
- अतः बाद में देवेन्द्र नाथ टैगोर का ब्रह्म समाज, आदि ब्रह्मसमाज कहलाया
- 1872 में केशवचन्द्र सेन के प्रयासो से Native Marriage Act पारित हुआ तथा विवाह की न्यूनतम आयु 14 व 18 वर्ष तय की गई ।
- केशवचन्द्र सेन ने अपनी नाबालिग पुत्री की शादी कूच बिहार के राजा के साथ कर दी थी इसलिए उनके समर्थकों ने अलग होकर 1878 में साधारण ब्रह्म समाज की स्थापना की ।

साधारण ब्रह्म समाज :-

समर्थक :-

- आनन्द मोहन बोस
- सुरेन्द्र नाथ बनर्जी
- द्वारिका नाथ गांगुली

केशवचन्द्र सेन के समाचार पत्र :- Indian Mirror

केशवचन्द्र सेन के संगठन

1. मैत्री सेन (संगत सभा)
2. टेबरनिकल ऑफ न्यू डिस्पेंसन
3. इंडियन रिफॉर्म एसोसिएशन

प्रार्थना समाज (1867) :-

महाराष्ट्र में केशवचन्द्र सेन के प्रयासों से स्थापना हुई

संस्थापक :-

1. जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे
2. आत्माराम पाण्डुरंग
3. R.G. भण्डारकर
4. चन्द्रावरकर

महादेव गोविन्द रानाडे :-

- गोखले के राजनीतिक गुरू थे
- इन्हें 'महाराष्ट्र का सुकरात' कहा जाता है ।

संगठन :-

1. विधवा विवाह संघ (1867)
2. पूना सार्वजनिक सभा (1871)
3. दक्कन एजुकेशनल सोसायटी (1884) (फर्ग्यूसन कॉलेज, पूणे)
4. नेशनल सोशल कॉन्फ्रेंस (1887)
   दक्कन एजुकेशनल सोसायटी बाद में फर्ग्यूसन कॉलेज कहलाई ।
   तिलक, गोखले, आगरकर तीनों इस कॉलेज से जुडे थें ।

आर्य समाज, 1875/ स्वामी दयानन्द सरस्वती :-

- आर्य समाज की स्थापना वर्ष 1875 में बम्बई में स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा की गई ।
- इसका उद्धेश्य वैदिक धर्म को पुनः शुद्ध रूप से स्थापित करना ।
  स्वामी जी ने झूठे धर्मों का खण्डन करने के लिए ''पाखण्ड खण्डनी पताका'' लहराई । इन्होनें ''वेदों की ओर लौटो'' का नारा दिया
- स्वामीजी ने गौधन की रक्षा के लिए ''गौरक्षणी सभा की स्थापना की तथा'' गौ करूणानिधि नामक पुस्तक की रचना की ।
- दयानन्द सरस्वती की प्रमुख रचनायें -
  1. सत्यार्थ प्रकाश
  2. पाखण्ड खण्डन
  3. वेद भाष्य भूमिका
  4. ऋग्वेद भाष्य
  5. अद्वैतमत का खण्डन
  6. पंचमहायज्ञ विधि आदि ।

रामकृष्ण मिशन, 1887 :-

- रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1887 में कलकत्ता के समीप बारानगर में स्वामी विवेकानंद ने की ।

वहाबी आन्दोलन

- ईरान में अब्दुल वहाब द्वारा शुरू किया गया था ।
- भारत में सैय्यद अहमद बरेलवी ने लोकप्रिय किया था ।
- उद्देश्य – दारूल हर्ब को दारूल इस्लाम में बदलना
  (दार-उल-हर्ब)
  ↓ ↓
  घर गैर मुसलमान
- प्रारंभ में पंजाब में सिक्खों के खिलाफ था ।
- पंजाब के विलय के बाद अंग्रेजों के खिलाफ हो गया था ।
- यह हिंसक एवं सांप्रदायिक आंदोलन था ।
- कालान्तर में पूर्वी भारत इसका मुख्य केन्द्र हो गया
  ↳ यहां के मुख्य नेता (1) हाजी करामात अली
  (2) शरीयत-उल्ला खां

अलीगढ आन्दोलन

- यह आन्दोलन सर सैय्यद अहमद खां ने चलाया था इन्होनें मुसलमानों में आधुनिकीकरण लाने का प्रयास किया इसलिए अंग्रेजी शिक्षा का समर्थन किया व अंग्रेजी सरकार के साथ सहयोग किया ।
- इन्होंने कुरान की वैज्ञानिक व्याख्या की ।
- पीर – मुरीदी प्रथा का विरोध किया ।
- बाइबिल पर टीका लिखी ।

संगठन –

1863 – मुहम्मडन लिटरेरी एसोसिएशन
1864 – साइंटिफिक सोसायटी
1875 – एंग्लो – ओरियन्टल मोहम्मडन कॉलेज
↓
यही 1920 में अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय बना ।
1888 – देशभक्त एसोसिएशन नामक पार्टी बनाई ।
- बनारस के राजा शिवप्रसाद के साथ मिलकर बनाई थी ।
- यह कांग्रेस की विरोधी संस्था थी ।

समाचार पत्र –

1. तहजीब उल अखलाक
2. राजभक्त मुसलमान

अहमदिया आन्दोलन :-

स्थापना – 1889
स्थान – गुरूदासपुर के कादिया नामक स्थान पर
संस्थापक – मिर्जा गुलाम अहमद

रहनुमाई मजदयासन/ रहनुमा-ए-माजदा-ए-सभा (पारसी) :-

स्थापना वर्ष – 1851

संस्थापक सदस्य –

नौरोजी फरदीन जी, दादाभाई नौरोजी, आर.के. कामा, एस. एस. बंगाली इस संस्था ने 'रास्त गोफ्तार' (सत्यवादी) नामक पत्रिका का प्रकाशन किया परमहंस मण्डली की स्थापना महाराष्ट्र में गोपाल हरिदेश मुख (लोकहितवादी) ने की ।

राष्ट्रीय आन्दोलन

28 दिसम्बर 1885 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई इस दिन से भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रारम्भ माना जाता है ।

कांग्रेस की स्थापना के पहले के राष्ट्रीय आन्दोलन के संगठन

1. बंगाल जमींदार सभा – 1838
   - भारत का पहला राजनीतिक संगठन
   - द्वारिका नाथ टैगोर } संस्थापक
   - राधाकान्त देव }
2. बंगाल ब्रिटिश एसोसिएशन (1843)
   - द्वारिका नाथ टैगोर
3. ब्रिटिश इण्डिया एसोसिएशन (1851)
   - देवेन्द्र नाथ टैगोर
   - राधाकान्त देव
4. इण्डिया लीग – (1875)
   - शिशिर कुमार घोष
5. इण्डियन एसोसिएशन (1876)
   - सुरेन्द्र नाथ बनर्जी

- लिटन ने ICS की अधिकतम आयु 19 वर्ष कर दी थी तब सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने आन्दोलन चलाया था

6. नेशनल कॉन्फ्रेंस (1883)

- सुरेन्द्र नाथ बनर्जी तथा आनन्द मोहन बोस

मद्रास –

1. मद्रास नेटिव एसोसिएशन (1852)
   इस संगठन ने 1857 की क्रांति की आलोचना की इसलिए लोगों में अलोकप्रिय हो गया था ।

2. मद्रास महाजन सभा (1884)
   वी. राघवाचारी
   सुब्रह्मण्यम अय्यर
   आनन्द चारलू

बॉम्बे –

1. बॉम्बे एसोसिएशन (1852)
   ↓
   नाम बदलकर बॉम्बे प्रेसीडेन्सी एसोसिएशन (1885)
   - बदरूद्दीन तैय्यबजी
   - फिरोजशाह मेहता

लंदन –

ईस्ट इण्डिया एसोसिएशन (1866)
↳ दादा भाई नौरोजी

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

- 1884 में थियोसोफिकल सोसाइटी का अडियार में सम्मेलन हुआ ।
- ए. ओ. ह्यूम ने भारतीयों को अखिल भारतीय संगठन बनाने का सुझाव दिया ।
- इस संगठन का नाम 'इंडियन नेशनल यूनियन' रखा गया । इसका पहला सम्मेलन पूना में होना था लेकिन वहां पर प्लेग फैल जाने के कारण इनका पहला सम्मेलन बॉम्बे के गोकुल दास तेजपाल संस्कृत कॉलेज में हुआ । दादाभाई नौरोजी के कहने पर इसका नाम इंडियन नेशनल कांग्रेस रखा गया
- (कांग्रेस उत्तरी अमेरिका से लिया गया शब्द है)
- कांग्रेस का अर्थ – लोगों का समूह (A Group of People)

कांग्रेस अधिवेशन

सन्	स्थान	अध्यक्ष
1885	बम्बई	व्योमेश चन्द्र बनर्जी
1886	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी
1887	मद्रास	बदरूद्दीन तैयबजी
1888	इलाहाबाद	जॉर्ज यूले
1889	बम्बई	विलियम वेडरबर्न
1890	कलकत्ता	फिरोजशाह मेहता
1891	नागपुर	बी. आनन्द चार्लू
1892	इलाहाबाद	व्योमेश चन्द्र बनर्जी
1893	लाहौर	दादा भाई नौरोजी
1894	मद्रास	अल्फ्रेड वेब
1895	पूना	सुरेन्द्र नाथ बनर्जी
1896	कलकत्ता	रहीमतुल्ला सायानी
1897	अमरावती	शंकरन नायर
1898	मद्रास	आनन्द मोहन बसु
1899	लखनऊ	रमेशचन्द्र दत्त
1900	लाहौर	नारायण गणेश चंदावरकर
1901	कलकत्ता	दिनशॉ ईतुलजी वाचा
1902	अहमदाबाद	दिनशॉ ईतुलची वाचा
1903	मद्रास	लल मोहन घोष
1904	बम्बई	सर हेनरी कॉटन
1905	बनारस	गोपाल कृष्ण गोखले
1906	कलकत्ता	दादा भाई नौरोजी
1907	सूरत (स्थगित)	रास बिहारी घोस
1908	मद्रास	रास बिहारी घोस
1909	लाहौर	मदन मोहन मालवीय
1910	इलाहाबाद	विलियम वेडर बर्न
1911	कलकत्ता	विशन नारायण दत्त
1912	बांकीपुर	स.बा. रंगनाथ नृसिंह मुधोलकर
1913	करॉंची	नवाब सैयद3 मुहम्मद बहादुर
1914	मद्रास	भूपेन्द्र नाथ बसु
1915	बम्बई	सत्येन्द्र प्रसाद सिन्हा
1916	लखनऊ	अम्बिका चरण मजूमदार
1917	कलकत्ता	ऐनी बेसेंट
1918	बम्बई (विशेष)	सैयद इमाम हसन
1919	अमृतसर	मोती लाल नेहरू
1920	नागपुर	चक्रवर्ती विजय राघवाचार्य
1920	कलकत्ता (विशेष)	लला लाजपत राय
1921	अहमदाबाद	अजमल खॉं
1922	गया	चितरंजन दास
1923	काकोनाडा	मोहम्मद अली
1923	दिल्ली (विशेष)	अबुल कलाम आजाद

1924	बेलगांव	महात्मा गांधी
1925	कानपुर	सरोजनी नायडू
1926	गोहाटी	श्रीनिवास आयंगर
1927	मद्रास	डॉ. अन्सारी
1928	कलकत्ता	मोती लाल नेहरू
1929	लाहौर	जवाहर लाल नेहरू
1931	करांची	सरदार पटेल
1932	दिल्ली	रणछोडमल अमृतलाल
1933	कलकत्ता	नेल्ली सेन गुप्ता
1934	बंबई	राजेन्द्र प्रसाद
1936	लखनऊ	जवाहर लाल नेहरू
1937	फैजपुर	जवाहर लाल नेहरू
1938	हरिपुरा	सुभाषचन्द्र बोस
1939	त्रिपुरा	सुभाषचन्द्र बोस
1940	रामगढ़	अबुल कलाम आजाद
1946	मेरठ	जे.बी. कृपलानी
1948	जयपुर	पट्टाभि सीतारमैया

- A.O. ह्यूम 1885–1905 तक कांग्रेस के सचिव रहे थे ।
- बाल गंगाधर तिलक कभी कांग्रेस के अध्यक्ष नहीं रहे थे ।
- मदन मोहन मालवीय 4 बार कांग्रेस के अध्यक्ष बने थे ।
  - 1909 – लाहौर
  - 1918 – दिल्ली
  - 1932 – दिल्ली
  - 1933 – कलकत्ता
- इस समय (1932 व 1935 सम्मेलन में) मदन मोहन जेल में थे । इस कारण 1932 में अमृत रणछोडदास गट्टानी तथा 1933 में नेल्ली सेन गुप्ता (विदेशी महिला) ने अध्यक्षता की थी ।
- दादा भाई नौरोजी तथा जवाहर लाल नेहरू कांग्रेस के 3–3 बार अध्यक्ष बने थे ।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के चरण :-

प्रथम चरण	– 1885	–	1905 ई.	– नरमपंथी
द्वितीय चरण	– 1905	–	1919 ई.	– गरमपंथी
तृतीय चरण	– 1919	–	1947 ई.	– गांधी युग

प्रथम चरण (1885–1905 ई.) नरमपंथी

नरमपंथी विचारधारा –

- अंग्रेज न्यायप्रिय हैं ।
- ब्रिटिश राज्य भारत हेतु दैवीय वरदान है
- भारतीय समाज अभी जड है, इनमें राजनैतिक जागरूकता नहीं है अतः इन्हें राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल नहीं किया जाना चाहिए ।
- इनके साधन – सम्मेलन बुलाना, भारतीय जनता की मांगों को अभिव्यक्त करना, ब्रिटिश सरकार को अनुनय विनय, ज्ञापन, प्रार्थना पत्र आदि पेश करना
- सभी संप्रदायों, क्षेत्रों, वर्गो को समान महत्व देना,
- समाज में राजनैतिक चेतना के उदय के लिए शैक्षणिक विकास किया जाना चाहिए ।

प्रमुख नरमपंथी नेता –

- दादाभाई नौरोजी
- फिरोजशाह मेहता
- गोपाल कृष्ण गोखले
- बदरूद्दीन तैयब जी
- सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, व्योमेश चन्द्र बनर्जी

द्वितीय चरण (1905–1919ई.)–गरमपंथी युग–

गरमपंथियों की विचारधारा –

- ब्रिटिश शासन शोषणकारी प्रवृत्ति का है ।
- ब्रिटिश शासन साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का है ।
- भारतीय समाज यद्यपि जड है परन्तु इन्हें राष्ट्रीय आंदोलन में जोडकर भारतीयों में राजनैतिक जागरूकता लायी जा सकती है ।
- गरमपंथियों के साधन – भिक्षावृत्ति का विरोध, मांगे अधिकार पूर्ण रूप से रखनी चाहिए । इस हेतु सरकार पर दबाव बनाने हेतु जनता एवं समाज का समर्थन आवश्यक है ।
- उत्तरदायित्व से क्षमताएं विकसित होती है । स्वतंत्रता ही स्वतंत्रता के काबिल बनाती है ।
- राष्ट्रीय आन्दोलन को शक्तिशाली बनाने हेतु धार्मिक प्रतीकों, क्षेत्रीय मांगों, योजनाओं को अपनाया जाना चाहिए ।
- स्वदेशी आन्दोलन चलाने एवं विदेशी का बहिष्कार करना चाहिए ।
- प्रमुख गरमपंथी नेता –
  - बाल गंगाधर तिलक
  - लाला लाजपतराय
  - विपिन चन्द्र पाल
  - अरविन्द घोष

मुस्लिम लीग :-

- अक्टूबर 1906 में आगा खां के नेतृत्व में एक मुस्लिम प्रतिनिधि दल शिमला जाकर लॉर्ड मिन्टों से मिला । लॉर्ड मिण्टो ने मुस्लिमों को संगठित होने का सुझाव दिया ।

- 30 दिसम्बर 1906 को मुस्लिम लीग की स्थापना ढाका के नवाब सलीमुल्लाह ने की । इसके पहले सम्मेलन की अध्यक्षता वकार-उल-मुल्क ने की ।

1916 लखनऊ अधिवेशन –

- अध्यक्ष – अम्बिका चरण मजूमदार
- गरमपंथी-नरमपंथी समझौता
- कांग्रेस-मुस्लिम लीग समझौता
- इस समझौते के कारण
  - सूरत अधिवेशन में फूट के बाद गरमपंथी अलग-थलग पड गये । कांग्रेस राष्ट्रीय आंदोलन का केन्द्र बन गया ।
  - नरमपंथी भी 1907 ई. के बाद से निष्क्रिय होते जा रहे थे । नवऊर्जा संचार हेतु समझौता हुआ ।
  - नरमपंथी ब्रिटिश नीतियों से असंतुष्ट थे । 1909 ई. के सुधार उनकी आशानुरूप नहीं थे ।
  - गरमपंथियों की विचारधारा में बदलाव आ चुका था ।
  - कट्टर नरमपंथी नेता फिरोजशाह एवं गोपाल कृष्ण गोखले की 1915 में मृत्यु को चुकी थी ।
  - प्रथम विश्व युद्ध से उत्पन्न परिस्थितियों से भी असंतोष बढ गया ।
- 1917 में कांग्रेस में पुनः फूट पड गई ।

1909 का भारत परिषद् अधिनियम
मार्ले-मिन्टो सुधार

↓ भारत सचिव ↓ G.G

अधिनियम के प्रावधान –

1. केन्द्रीय विधानपरिषद् में सदस्यों की संख्या बढाई गई । अब 69 सदस्य थे जिनमें से 9 स्थायी तथा 60 अतिरिक्त सदस्य होते थे ।

2. गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद् में एक भारतीय सदस्य होगा । (S.P. सिन्हा प्रथम भारतीय सदस्य थे जिन्हें विधि सदस्य बनाया गया ।) (सत्येन्द्र प्रसाद सिन्हा)

3. प्रान्तीय विधानपरिषद् में भी सदस्यों की संख्या बढाई गई । जैसे- बंगाल, मद्रास, बॉम्बे, U.P. (United Province) में 50 सदस्य
   पंजाब, बर्मा, असम – 30 सदस्य

4. विधानपरिषद् के सदस्यों को पूरक प्रश्न पूछने का अधिकार दिया गया ।
   बजट पर बहस कर सकते थे लेकिन बजट पर मत-विभाजन नहीं करवाया जा सकता था ।

5. इन विषयों से संबंधित प्रश्न नहीं पूछे जा सकते थे
   - विदेशी मामले
   - देशी रियासतें
   - रेलवे
   - ऋण
   - ब्याज
6. मुस्लिमों को पृथक निर्वाचन दिया गया ।
7. भारत परिषद् में भी एक भारतीय सदस्य की नियुक्ति की जायेगी ।
   (भारत परिषद् में पहले भी भारतीय सदस्य होते थे लेकिन अब अनिवार्य कर दिया गया था, 1907 में भारत परिषद् में 2 भारतीय सदस्य थे ।)
   1. सैय्यद हुसैन बिलग्रामी
   2. K.G. गुप्ता

दिल्ली दरबार (1911) :-

ब्रिटिश सम्राट जॉर्ज पंचम तथा उनकी रानी मैरी भारत आये ।

1. बंगाल विभाजन रद्द कर दिया था ।
2. राजधानी को कलकत्ता से दिल्ली लाया जायेगा ।

Note – इस समय बॉम्बे में गेटवे ऑफ इंडिया बनाया गया

दिल्ली षडयंत्र केस :-

- 1912 में राजधानी को दिल्ली ला रहे थे तो रास बिहारी बोस के नेतृत्व में चांदनी चौक में G.G. हॉर्डिंग-II पर बम फेंका गया ।
- इस मुकदमें में 4 लोगों को फांसी दी थी ।
  1. अवध बिहारी
  2. अमीर चन्द
  3. बालमुकुन्द
  4. बसन्त कुमार

कामागाटामारू घटना (1914) :-

- कामागाटामारू एक जापानी जहाज था ।
- सिंगापुर में रहने वाला गुरदीत सिंह 376 भारतीयों को लेकर कनाडा के वेंकुवर बन्दरगाह गया ।
- कनाडा ने इन्हें प्रवेश नहीं दिया । लेकिन कनाडा में रहने वाले भारतीयों ने इसका विरोध किया तथा इनके पक्ष में आंदोलन किया व तटीय समिति का गठन किया ।
  इसमें तीन सदस्य थे –
  1. बलवन्त सिंह
  2. रहीम हुसैन
  3. सोहन लाल पाठक

- जहाज वापस जापान के याकोहामा बन्दरगाह पहुंचा तब तक प्रथम विश्व युद्ध शुरू हो चुका था । अतः अंग्रेज सरकार ने जहाज को सीधा कलकत्ता लाने का आदेश दिया व बजबज बन्दरगाह (कलकत्ता) पर भगदड हो गई तथा 18 लोग मारे गये थे ।

होमरूल लीग आन्दोलन

- यह सिद्धान्त आयरलैण्ड से लिया गया है । इसका उद्देश्य ब्रिटिश शासन के रहते हुये आंतरिक मामलों में स्वायत्ता प्राप्त करना था ।
- 'इण्डियन होमरूल लीग' की स्थापना बाल गंगाधर तिलक ने अप्रेल 1916 में बेलग्राम में की थी ।
- जबकि एनीबेसेन्ट ने सितम्बर 1916 में मद्रास के पास अड्यार में 'होमरूल लीग' की स्थापना की । इसने थियोसोफिकल सोसायटी का तंत्र प्रयुक्त किया । इसके सचिव जॉर्ज अरुथेल एवं वी.पी. पाड्या सहयोगी थे ।
- तिलक के होमरूल लीग का कार्यक्षेत्र महाराष्ट्र (बॉम्बे को छोडकर), आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, मध्यप्रान्त जबकि इसके अतिरिक्त शेष भारत एनी बेसेन्ट के होमरूल लीग के तहत आता था ।
- तिलक ने 'मराठा' (अंग्रेजी) एवं 'केसरी' (मराठी में) वहीं एनीबेसेन्ट ने 'New India' एवं 'Common wheel' नामक समाचार पत्र निकाले ।

होमरूल लीग का संगठनात्मक स्वरूप था । इसमें ग्रामीण स्तर समितियों का गठन किया गया था ।

तिलक ने स्थानीय मांगों को होमरूल के साथ जोडा जैसे

- क्षेत्रीय भाषाओं के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन
- सरकारी आबकारी नीति का विरोध
- नमक कर का विरोध
- अस्पृश्यता निवारण हेतु आन्दोलन
- सांप्रदायिक सौहार्द हेतु प्रयास

मदन मोहन मालवीय, मुहम्मद अली जिन्ना, जवाहर लाल नेहरू, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी आदि एनीबेसेन्ट के होमरूल आंदोलन के सदस्य बने ।

गोखले द्वारा स्थापित 'भारत सेवक समाज' के सदस्यों पर प्रतिबंध था कि वे होमरूल के सदस्य नहीं बने ।

जब एनीबेसेन्ट को गिरफ्तार किया गया तो सुब्रमण्यम अय्यर ने सर की उपाधि त्याग दी । होमरूल आंदोलन नेतृत्व विहिन हो गया ।

20 अगस्त 1917 की मोण्टेग्यू घोषणा तथा एनीबेसेन्ट ने होमरूल आंदोलन समाप्त किया ।

तिलक 'India Unrest'के लेखक वेलेन्टाइन शिरोल के विरूद्ध मानहानि का मुकदमा दर्ज करने लंदन चले गये । पीछे से होमरूल लीग नेतृत्वविहीन हो गई ।

राष्ट्रीय आन्दोलन का तृतीय चरण
गांधी युग (1919-1947)

चम्पारण सत्याग्रह

चम्पारण (बिहार) के किसान तिनकठिया प्रथा से पीडित थे जिसके तहत उन्हें अपनी जमीन के 3/20 भाग पर नील की खेती करना अनिवार्य था, क्योंकि नील व्यापारियों ने अग्रिम धनराशि देकर किसानों के साथ इस संबंध में समझौता कर रखा था । किसानों के लिए नील की खेती पर्याप्त लाभदायक नहीं थी अतः प्रायः वे इसके प्रति अनिच्छुक रहते थे और वे इस समझौते से मुक्त होना चाहते थे। इस बात पर तनाव बढ गया तथा एक स्थानीय नेता राजकुमार शुक्ल ने गांधीजी को यहां आमंत्रित किया गांधीजी के पहुंचने पर आंदोलन अधिक लोकप्रिय हुआ तथा सरकार ने एक कमेटी का गठन किया तथा इस समिति की सिफारिशों पर इस वसूली को रोका गया । इस प्रकार गांधीजी का यह प्रथम आंदोलन सफल रहा । गांधीजी के अन्य सहयोगी

1. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
2. जे.बी कृपलानी
3. नरहरि परिख
4. महादेव देसाई उर्फ भाऊ

जूडिथ ब्राउन ने अपनी पुस्तक 'Gandhi's rise to Power' में लिखा है कि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इस आंदोलन की सफलता पर गांधीजी को 'महात्मा' कहा ।

खेडा आन्दोलन

फसल अच्छी नहीं होने से खेडा के किसान लगान अदा करने की स्थिति में नहीं थे । अतः उन्होंने सरकार से लगान माफी की अपील की परन्तु सरकार द्वारा माफ न करने की स्थिति में उन्होंने आंदोलन कर दिया । गांधीजी की अध्यक्षता में 'गुजरात किसान सभा' का गठन किया गया ।

1. वल्लभ भाई पटेल
2. इन्दुलाल याग्निक
3. शंकरलाल बैंकर

अहमदाबाद का मिल-मजदूरों का आन्दोलन :-

प्लेग बोनस की वजह से यह आंदोलन चला था । मिल मालिक अम्बालाल साराभाई गांधीजी के मित्र थे

इस आंदोलन के कारण गांधीजी ने भारत में पहली बार आमरण अनशन किया । इसमें भी गांधीजी को सफलता मिली तथा मिल मालिक को 35 प्रतिशत बोनस देने पर सहमत होना पडा ।

- अनुसूइया बेन - गांधीजी की शिष्या तथा अम्बालाल साराभाई की बहन

रौलेट एक्ट के विरूद्ध सत्याग्रह

1917 में ब्रिटिश सरकार ने सिडनी रौलेट की अध्यक्षता में 'सैडिशन समिति' का गठन किया ।
विधानपरिषद् के तमाम भारतीय सदस्यों के विरोध के बावजूद मार्च 1919 में रौलेट एक्ट पारित कर दिया गया जो बिना वकील, बिना अपील एवं बिना दलील का कानून था ।

- इसके विरोध में गांधीजी ने सत्याग्रह सभा की स्थापना की ।
- 30 मार्च का अखिल भारतीय हडताल का आयोजन रखा लेकिन फिर इसे 6 अप्रेल तक स्थगित कर दिया 6 अप्रैल,1919 – प्रथम अखिल भारतीय हडताल
- स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने गांधीजी को दिल्ली आमंत्रित किया । लेकिन गांधीजी को पलवल स्टेशन पर गिरफ्तार करके बॉम्बे छोड दिया गया ।
- अमृतसर में गांधीजी की गिरफ्तारी का विरोध कर रहे डॉ. सतपाल एवं सैफुद्दीन किचलू को 10 अप्रैल 1919 को गिरफ्तार कर लिया गया । इसके विरोध में जनता के मौन जुलूस पर सरकार की दमनात्मक कार्यवाही से जनता उग्र हो गई एवं उन्होंने अमृतसर में 5 गोरे लोगों की हत्या कर दी । स्थिति असामन्य होने पर मार्शल लॉ लगाया एवं व्यवस्था जनरल आर. डायर को सौंप दी ।

जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड

- 13 अप्रैल 1919 ई. को वैशाखी के दिन मेले की भीड पर जनरल डायर ने गोलियां चलाई । सरकारी आंकडों के अनुसार 379 लोग मारे गये परन्तु वास्तव में मरने वालों की संख्या 1000 से भी अधिक थी
- हंसराज नामक भारतीय न जनरल डायर की सहायता की थी ।
- पंजाब के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर ओ. डायर ने कार्यवाही को उचित ठहराया ।
- रवीन्द्रनाथ टैगोर ने विरोधस्वरूप सर (नाइटहुड) की उपाधि लौटा दी । शंकरन नायर ने गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद् की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया ।
- सरकार ने इसकी जांच के लिए हंटर कमेटी का गठन किया जिसमें 03 भारतीय सदस्य थे ।
  1. चिमनलाल सीतलवाड
  2. सुल्तान अहमद
  3. जगत नारायण
- कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में डायर को निर्दोष ठहराया एवं कहा कि वह केवल परिस्थितियों को समझ नहीं पाया ।
- गांधीजी ने हंटर कमेटी की रिपोर्ट को 'पन्ने दर पन्ने निर्लज्ज लीपापोती कहा ।'
- कांग्रेस ने हत्याकाण्ड की जांच के लिए मदन मोहन मालवीय की अध्यक्षता में समिति गठित की जिसके अन्य सदस्य गांधीजी तथा मोतीलाल नेहरू थे ।
- हाउस ऑफ लॉर्ड्स ने जनरल डायर को Sword of honour भेंट की तथा उसे ब्रिटिश साम्राज्य का शेर कहा ।
- कालान्तर में शहीद उधमसिंह ने ओ डायर की हत्या कर दी थी ।

खिलाफत आन्दोलन

- मुस्लिम लीग के मध्यमवर्गीय नेतृत्व ने भारत में खिलाफत आन्दोलन की नींव रखी । इसके मुख्य नेता – डॉ. अहमद अंसारी मौलाना मोहम्मद अली, मौलाना शौकत अली, अब्दुल कलाम आजाद आदि थे
- इनकी मांग थी कि तुर्की का खलीफा (सुल्तान) जो कि मुसलमानों का धार्मिक एवं राजनीतिक प्रमुख होता था । उसके साथ ब्रिटिश सरकार प्रथम विश्वयुद्ध के बाद सम्मानपूर्ण व्यवहार करें । (क्योंकि तुर्की ने युद्ध में जर्मनी का साथ दिया था) तथा तुर्की साम्राज्य को छिन्न-भिन्न नहीं किया जाये ।
- 1919 में अखिल भारतीय खिलाफत कमेटी का गठन करके गांधीजी को उसका अध्यक्ष बनाया गया ।
- मुस्लिम लीग में भी जिन्ना के नेतृत्व वाले अभिजात्य वर्ग ने भी खिलाफत आन्दोलन का विरोध किया था
- 31 अगस्त, 1920 को खिलाफत दिवस के रूप में मनाया गया ।
- कालान्तर में खिलाफत आंदोलन, असहयोग आंदोलन का ही हिस्सा बन गया ।
- तुर्की में मुस्तफा कमाल पाशा के नेतृत्व में यंग तुर्की आंदोलन चला और इन्होंने खलीफा की सत्ता को समाप्त कर दिया ।
- खिलाफत आंदोलन समाप्त हो गया ।

1919 का भारत सरकार अधिनियम (मोण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार)

- मोण्टेग्यू घोषणा – भारत सचिव लॉर्ड मोण्टेग्यू ने 20 अगस्त 1917 को ब्रिटिश संसद में यह घोषणा की कि ब्रिटिश सरकार का उद्देश्य भारत में उत्तरदायी शासन की स्थापना करना है ।

अधिनियम की मुख्य विशेषताएं :-

- भारत परिषद् के सदस्यों की संख्या (8-12) कर दी गई ।
- गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद् में 3/8 सदस्य अब भारतीय होगें ।
- केन्द्र में द्विसदनात्मक व्यवस्था होगी ।
  1. काउंसिल ऑफ स्टेट

2. केन्द्र में द्विसदनात्मक असेम्बली
- केन्द्र एवं राज्यों के बीच विषयों का विभाजन किया गया
  1. संघीय सूची
  2. प्रान्तीय सूची
- पहली बार प्रत्यक्ष निर्वाचन की परम्परा शुरू की गई यद्यपि महिलाओं को मताधिकार नहीं दिया गया
- मुसलमानों के साथ सिक्खों, आंग्ल-भारतीय, भारतीय ईसाईयों एवं यूरोपियन्स के लिए भी पृथक निर्वाचन पद्धति लागू कर दी गई ।
- प्रान्तों में द्वैध शासन की स्थापना । इसके अन्तर्गत प्रान्तीय विषय दो भागों में विभाजित किये गये -
  1. आरक्षित
  2. अनारक्षित

  1909 के अधिनियम में कहा गया था कि 10 वर्ष बाद भारत में नये सुधार किये जायेंगे ।

Note – सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने 1919 में अखिल भारतीय उदारवादी संघ का गठन कर लिया था ।

असहयोग आंदोलन :-

- सितम्बर 1920 के कांग्रेस के कलकत्ता के विशेष अधिवेशन में (अध्यक्ष-लाला लाजपतराय) गांधीजी ने असहयोग का प्रस्ताव पेश किया । कांग्रेस के अनेक महत्वपूर्ण नेताओं ने इसका विरोध किया - जैसे -सी. आर. दास, जिन्ना, एनी बेसेन्ट, शंकरन नायर, विपिनचन्द्र पाल, मालवीय आदि ।
- फिर भी गांधीजी ने अली बंधुओं एवं मोतीलाल नेहरू के समर्थन से यह प्रस्ताव पारित करवा लिया ।
- दिसम्बर 1920 के कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन (विजय राघवाचार्य) में इस प्रस्ताव की पुष्टि की गई । इस बार प्रस्ताव सी.आर. दास ने ही प्रस्तुत किया था । जब असहयोग का प्रस्ताव पास हुआ तो इसके विरोध में जिन्ना, एनी बेसेन्ट एवं विपिन चन्द्र पाल ने कांग्रेस छोड दी ।
- नागपुर अधिवेशन का ऐतिहासिक महत्व इसलिए है क्योंकि यहां पर वैधानिक साधनों के अन्तर्गत स्वराज्य प्राप्ति के लक्ष्य को त्यागकर सरकार के सक्रिय विरोध करने की बात को स्वीकार किया गया ।

स्वराज पार्टी:-

1 जनवरी 1923 को इलाहाबाद मे स्वराज पार्टी की स्थापना की गई ।
अध्यक्ष - सी.आर दास
सचिव - मोतीलाल नेहरू
1923 के चुनावों मे स्वराज दल को मध्य प्रान्त मे पूर्ण बहुमत बंगाल, संयुक्त प्राप्त, बॉम्बे मे प्रधानता एवं केन्द्रीय विधानमण्डल मे 101 मे से 42 स्थान प्राप्त हुये फलस्वरूप यह पार्टी संघीय मंत्रिपरिषद मे विट्ठलभाई पटेल को अध्यक्ष के पद पर निर्वाचित करवाने मे सफल रही ।

साइमन कमीशन

- 1927 ई. मे साइमन कमीशन का गठन किया गया जिसमें 7 सदस्य थे । इसका उद्देश्य भारत मे राजनीतिक सुधारो के लिए सिफारिशें देना था क्योंकि 1919 ई. के अधिनियम मे यह प्रावधान था कि प्रत्येक 10 वर्ष पश्चात ब्रिटिश सरकार एक आयोग का गठन करेगी जो कि संवैधानिक सुधारों की सिफारिशे करेगा ।
- चूँकि साइमन कमीशन मे 1 भी भारतीय सदस्य नही था इसलिए भारतीयों ने इसका विरोध किया
- मद्रास को जस्टिस पार्टी पंजाब को यूनिनिस्ट पार्टी भीमराव अम्बेडकर एवं मुस्लिम लीग के शफी-गुट साइमन कमीशन का विरोध नही किया

साइमन कमीशन की सिफारिशें :-

- 1919 ई. के भारत सरकार अधिनियम के तहत लागू की गई द्वैध शासन व्यवस्था को समाप्त कर उत्तरदायी शासन की स्थापना हो ।
- भारत मे संघात्मक व्यवस्था लागू की जाये ।
- केन्द्र मे भारतीयों को कोई भी उत्तरदायित्व न प्रदान किया जायें ।
- ब्रिटिश भारत एवं भारतीय रियायतो को मिलाकर एक ब्रिटिश संघ का गठन किया जाना चाहिए ।
- वर्मा को भारत से अलग किया जाये तथा उडीसा एवं सिंध को अलग प्रान्तों का दर्जा दिया जायें ।
- मताधिकार को और अधिक व्यापक करना चाहिए यद्यपि सार्वभौमिक मताधिकार नही दिया जाना चाहिए
- पृथक निर्वाचन को असंतोष जनक बताया फिर भी इसको जारी रखने की सिफारिशें की गई ।

नेहरू रिपोर्ट 1928

साइमन कमीशन के बहिष्कार के बाद भारत सचिव लॉर्ड बर्किनहेड ने भारतीयों के समक्ष एक चुनौती रखी के वे ऐसे संविधान का निर्माण कर ब्रिटिश संसद के समक्ष रखे जिसे सभी दलो का समर्थन प्राप्त हो । कांग्रेस ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुये 28 फरवरी 1928 ई. को दिल्ली मे सर्वदलीय सम्मेलन बुलाकर मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षाता मे 8 सदस्यीय समिति का गठन किया ।

सिफारिशें:-

1. ब्रिटिश भारत एवं भारतीय रियायतों को मिलाकर एक संघ की स्थापना की जायेगी ।